



Mr.ashish kumar mishra

20 Dec 1981

05:12 AM

Madhubani

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120138301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 19-20/12/1981
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 05:12:00 घंटे
इष्ट _____: 56:39:28 घटी
स्थान _____: Madhubani
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:27:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:08:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 05:22:32 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:58 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:16:28 घंटे
सूर्योदय _____: 06:32:12 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:00:52 घंटे
दिनमान _____: 10:28:39 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 04:23:55 धनु
लग्न के अंश _____: 15:41:30 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: चित्रा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: शोभन
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: पे-पेशवा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1903	मार्गशीर्ष	29
पंजाबी	संवत : 2038	पौष	6
बंगाली	सन् : 1388	पौष	5
तमिल	संवत : 2038	मार्गड़ी	5
केरल	कोल्लम : 1157	धनु	5
नेपाली	संवत : 2038	पौष	6
चैत्रादि	संवत : 2038	पौष	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2038	मार्गशीर्ष	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
 तिथि समाप्ति काल _____ : 25:04:56
 जन्म तिथि _____ : 10
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : हस्त
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:15:34 घंटे
 जन्म योग _____ : चित्रा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : सौभाग्य
 योग समाप्ति काल _____ : 19:27:20 घंटे
 जन्म योग _____ : शोभन
 सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
 करण समाप्ति काल _____ : 12:19:20 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 04:51:06
 भभोग _____ : 66:03:10
 भोग्य दशा काल _____ : मंगल 6 वर्ष 5 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____ : भाद्रपद
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : श्रवण
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : कौलव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मार्जार
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : मेष
 चन्द्र _____ : मिथुन
 मंगल _____ : वृष
 बुध _____ : मीन
 गुरु _____ : मिथुन
 शुक्र _____ : कर्क
 शनि _____ : मीन
 राहु _____ : सिंह

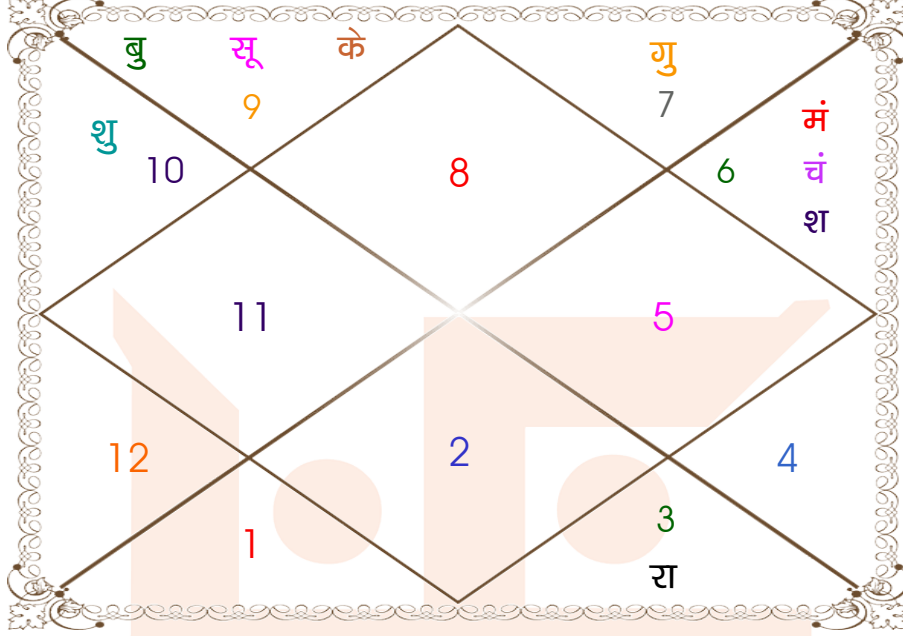


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

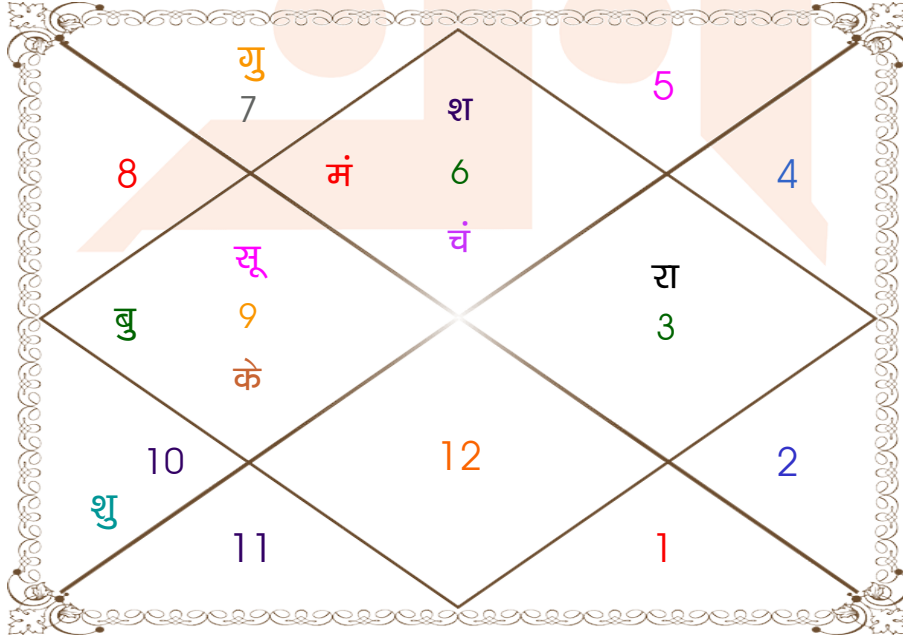


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

			रा
शु			
के सू बु	ल	गु	श चं मं

लग्न कुण्डली

रा			
		शु	
श मं	गु	ल	सू बु के

विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 5मा 23दि
मंगल

20/12/1981

14/06/2101

मंगल	13/06/1988
राहु	14/06/2006
गुरु	14/06/2022
शनि	13/06/2041
बुध	14/06/2058
केतु	13/06/2065
शुक्र	13/06/2085
सूर्य	14/06/2091
चन्द्र	14/06/2101

योगिनी
मंगला 0वर्ष 11मा 3दि
भामरी

23/11/2023

23/11/2027

भामरी	04/05/2024
भद्रिका	22/11/2024
उल्का	24/07/2025
सिद्धा	04/05/2026
संकटा	25/03/2027
मंगला	04/05/2027
पिंगला	24/07/2027
धान्या	23/11/2027

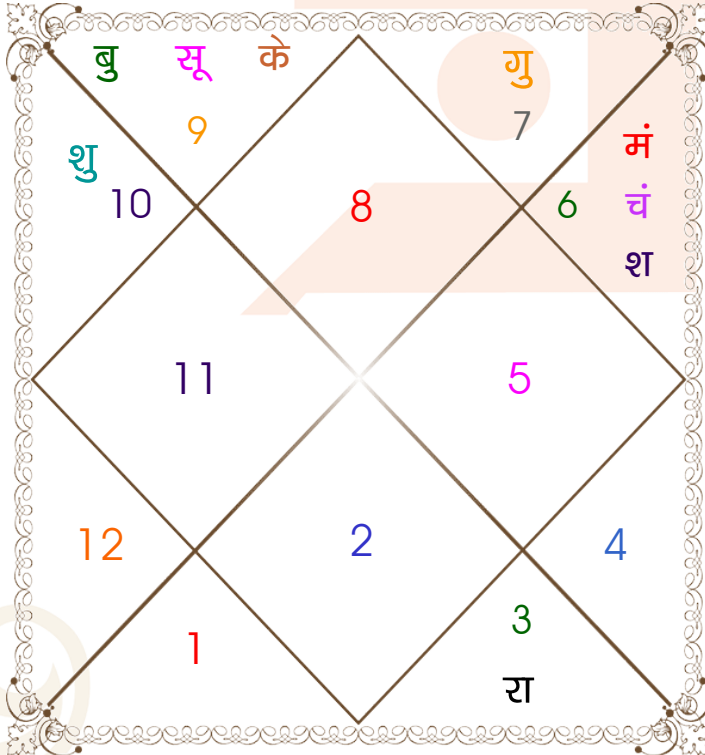
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	15:41:30	312:49:10	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
सूर्य			धनु	04:23:55	01:01:06	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			कन्या	24:19:14	12:12:07	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	मित्र राशि
मंगल			कन्या	08:14:40	00:27:26	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
बुध	अ		धनु	09:39:49	01:35:24	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	सम राशि
गुरु			तुला	10:35:27	00:10:02	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			मक	12:40:00	00:25:16	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
शनि			कन्या	27:06:41	00:04:12	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	29:09:29	00:02:18	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	उच्च राशि
केतु	व		धनु	29:09:29	00:02:18	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	उच्च राशि
हर्ष			वृश्चि	08:25:48	00:03:26	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
नेप			धनु	01:05:54	00:02:16	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	02:50:47	00:01:24	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
दशम भाव			सिंह	24:33:32	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	बुध	--

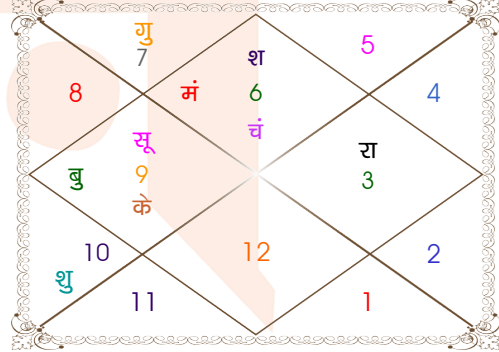
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:36:03

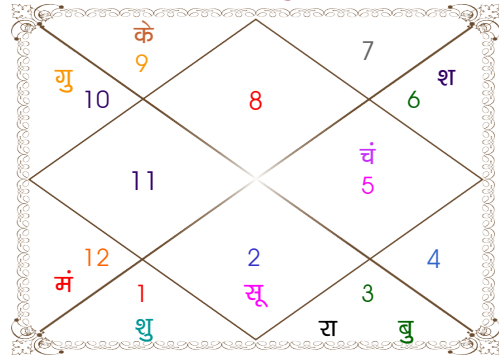
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 02:10:10	वृश्चिक 15:41:30
2	धनु 02:10:10	धनु 18:38:51
3	मकर 05:07:31	मकर 21:36:11
4	कुम्भ 08:04:52	कुम्भ 24:33:32
5	मीन 08:04:52	मीन 21:36:11
6	मेष 05:07:31	मेष 18:38:51
7	वृष 02:10:10	वृष 15:41:30
8	मिथुन 02:10:10	मिथुन 18:38:51
9	कर्क 05:07:31	कर्क 21:36:11
10	सिंह 08:04:52	सिंह 24:33:32
11	कन्या 08:04:52	कन्या 21:36:11
12	तुला 05:07:31	तुला 18:38:51

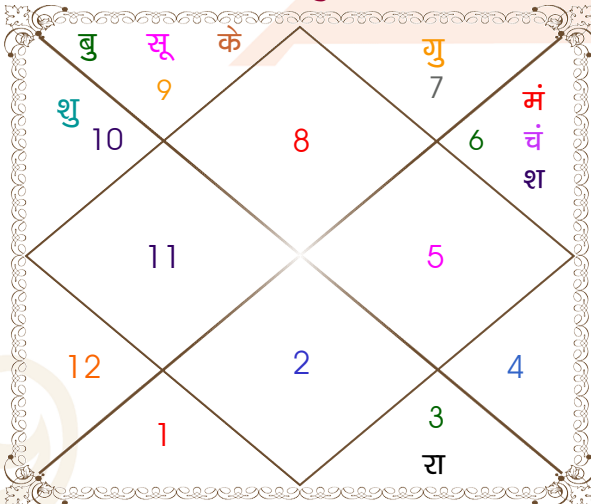
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	15:41:30
2	धनु	16:28:28
3	मकर	20:11:05
4	कुम्भ	24:33:32
5	मीन	25:44:22
6	मेष	22:17:37
7	वृष	15:41:30
8	मिथुन	16:28:28
9	कर्क	20:11:05
10	सिंह	24:33:32
11	कन्या	25:44:22
12	तुला	22:17:37

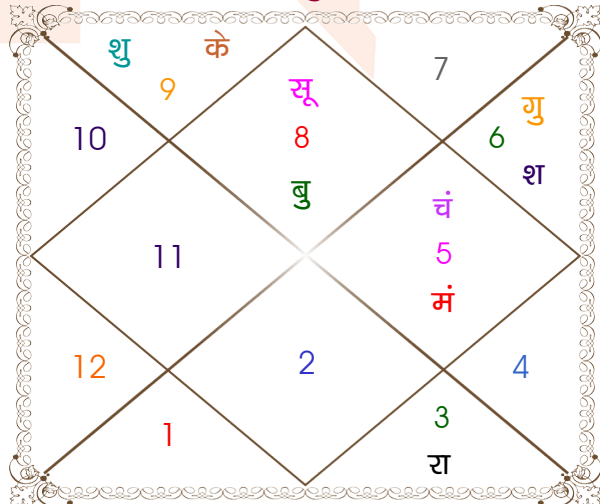
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



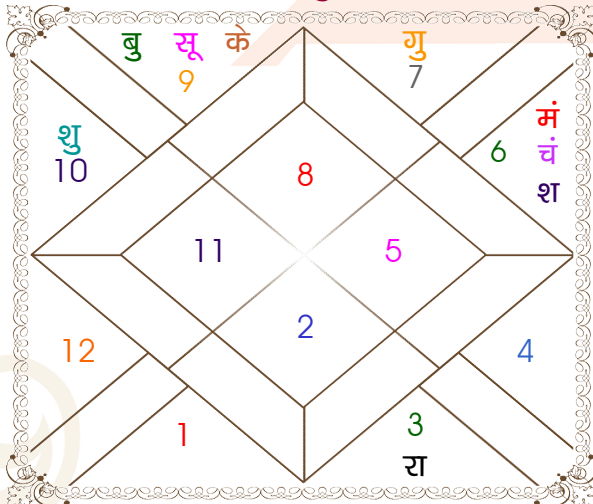
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	बाल	मुदित	आगम	4.03	53 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	बाल	मुदित	उपवेशन	2.58	66 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	वृद्ध	खल	आगमन	1.12	77 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	विकल	आगमन	0.00	51 %
गुरु	मातृ	धन	कुमार	खल	आगमन	3.28	63 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	युवा	मुदित	आगमन	4.70	41 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	मुदित	निद्रा	5.82	48 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	दीप्त	आगमन	0.00	36 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	दीप्त	नेत्रपाणि	0.00	36 %
कुल						21.52	

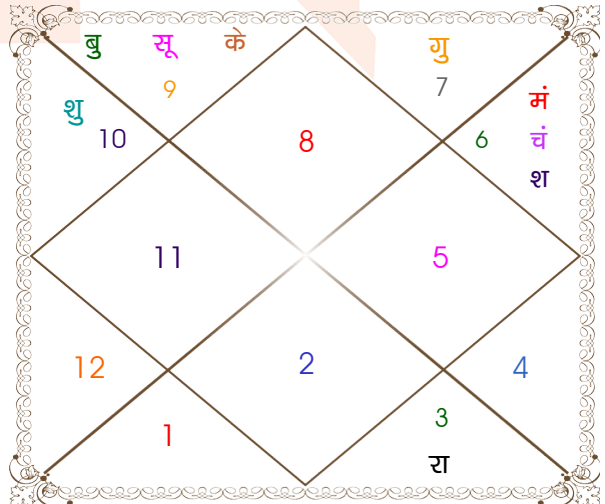
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 6 वर्ष 5 मास 23 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
20/12/1981	13/06/1988	14/06/2006	14/06/2022	13/06/2041
13/06/1988	14/06/2006	14/06/2022	13/06/2041	14/06/2058
20/12/1981	राहु 24/02/1991	गुरु 01/08/2008	शनि 16/06/2025	बुध 10/11/2043
राहु 28/11/1982	गुरु 20/07/1993	शनि 12/02/2011	बुध 25/02/2028	केतु 06/11/2044
गुरु 04/11/1983	शनि 26/05/1996	बुध 20/05/2013	केतु 04/04/2029	शुक्र 07/09/2047
शनि 13/12/1984	बुध 13/12/1998	केतु 26/04/2014	शुक्र 04/06/2032	सूर्य 14/07/2048
बुध 10/12/1985	केतु 01/01/2000	शुक्र 25/12/2016	सूर्य 17/05/2033	चंद्र 13/12/2049
केतु 08/05/1986	शुक्र 01/01/2003	सूर्य 13/10/2017	चंद्र 16/12/2034	मंगल 10/12/2050
शुक्र 08/07/1987	सूर्य 25/11/2003	चंद्र 12/02/2019	मंगल 25/01/2036	राहु 29/06/2053
सूर्य 13/11/1987	चंद्र 26/05/2005	मंगल 19/01/2020	राहु 01/12/2038	गुरु 05/10/2055
चंद्र 13/06/1988	मंगल 14/06/2006	राहु 14/06/2022	गुरु 13/06/2041	शनि 14/06/2058

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
14/06/2058	13/06/2065	13/06/2085	14/06/2091	14/06/2101
13/06/2065	13/06/2085	14/06/2091	14/06/2101	00/00/0000
केतु 10/11/2058	शुक्र 13/10/2068	सूर्य 01/10/2085	चंद्र 13/04/2092	मंगल 11/11/2101
शुक्र 10/01/2060	सूर्य 13/10/2069	चंद्र 02/04/2086	मंगल 12/11/2092	राहु 21/12/2101
सूर्य 17/05/2060	चंद्र 14/06/2071	मंगल 07/08/2086	राहु 14/05/2094	00/00/0000
चंद्र 16/12/2060	मंगल 13/08/2072	राहु 02/07/2087	गुरु 13/09/2095	00/00/0000
मंगल 14/05/2061	राहु 14/08/2075	गुरु 19/04/2088	शनि 14/04/2097	00/00/0000
राहु 01/06/2062	गुरु 14/04/2078	शनि 01/04/2089	बुध 13/09/2098	00/00/0000
गुरु 08/05/2063	शनि 13/06/2081	बुध 06/02/2090	केतु 14/04/2099	00/00/0000
शनि 16/06/2064	बुध 13/04/2084	केतु 14/06/2090	शुक्र 14/12/2100	00/00/0000
बुध 13/06/2065	केतु 13/06/2085	शुक्र 14/06/2091	सूर्य 14/06/2101	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 6 वर्ष 5 मा 25 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 16/06/2025 25/02/2028	शनि - केतु 25/02/2028 04/04/2029	शनि - शुक्र 04/04/2029 04/06/2032	शनि - सूर्य 04/06/2032 17/05/2033	शनि - चंद्र 17/05/2033 16/12/2034
बुध 03/11/2025 केतु 30/12/2025 शुक्र 12/06/2026 सूर्य 31/07/2026 चंद्र 21/10/2026 मंगल 17/12/2026 राहु 14/05/2027 गुरु 22/09/2027 शनि 25/02/2028	केतु 19/03/2028 शुक्र 26/05/2028 सूर्य 15/06/2028 चंद्र 19/07/2028 मंगल 11/08/2028 राहु 11/10/2028 गुरु 04/12/2028 शनि 06/02/2029 बुध 04/04/2029	शुक्र 14/10/2029 सूर्य 11/12/2029 चंद्र 17/03/2030 मंगल 24/05/2030 राहु 13/11/2030 गुरु 17/04/2031 शनि 17/10/2031 बुध 29/03/2032 केतु 04/06/2032	सूर्य 21/06/2032 चंद्र 20/07/2032 मंगल 10/08/2032 राहु 01/10/2032 गुरु 16/11/2032 शनि 10/01/2033 बुध 28/02/2033 केतु 20/03/2033 शुक्र 17/05/2033	चंद्र 04/07/2033 मंगल 07/08/2033 राहु 02/11/2033 गुरु 18/01/2034 शनि 19/04/2034 बुध 10/07/2034 केतु 13/08/2034 शुक्र 17/11/2034 सूर्य 16/12/2034
शनि - मंगल 16/12/2034 25/01/2036	शनि - राहु 25/01/2036 01/12/2038	शनि - गुरु 01/12/2038 13/06/2041	बुध - बुध 13/06/2041 10/11/2043	बुध - केतु 10/11/2043 06/11/2044
मंगल 09/01/2035 राहु 11/03/2035 गुरु 04/05/2035 शनि 07/07/2035 बुध 02/09/2035 केतु 26/09/2035 शुक्र 02/12/2035 सूर्य 22/12/2035 चंद्र 25/01/2036	राहु 29/06/2036 गुरु 15/11/2036 शनि 29/04/2037 बुध 23/09/2037 केतु 23/11/2037 शुक्र 16/05/2038 सूर्य 07/07/2038 चंद्र 01/10/2038 मंगल 01/12/2038	गुरु 03/04/2039 शनि 28/08/2039 बुध 06/01/2040 केतु 29/02/2040 शुक्र 01/08/2040 सूर्य 17/09/2040 चंद्र 03/12/2040 मंगल 26/01/2041 राहु 13/06/2041	बुध 16/10/2041 केतु 06/12/2041 शुक्र 02/05/2042 सूर्य 15/06/2042 चंद्र 27/08/2042 मंगल 18/10/2042 राहु 26/02/2043 गुरु 24/06/2043 शनि 10/11/2043	केतु 01/12/2043 शुक्र 31/01/2044 सूर्य 18/02/2044 चंद्र 19/03/2044 मंगल 09/04/2044 राहु 02/06/2044 गुरु 21/07/2044 शनि 16/09/2044 बुध 06/11/2044
बुध - शुक्र 06/11/2044 07/09/2047	बुध - सूर्य 07/09/2047 14/07/2048	बुध - चंद्र 14/07/2048 13/12/2049	बुध - मंगल 13/12/2049 10/12/2050	बुध - राहु 10/12/2050 29/06/2053
शुक्र 28/04/2045 सूर्य 18/06/2045 चंद्र 13/09/2045 मंगल 12/11/2045 राहु 16/04/2046 गुरु 01/09/2046 शनि 12/02/2047 बुध 09/07/2047 केतु 07/09/2047	सूर्य 23/09/2047 चंद्र 19/10/2047 मंगल 06/11/2047 राहु 22/12/2047 गुरु 02/02/2048 शनि 22/03/2048 बुध 05/05/2048 केतु 23/05/2048 शुक्र 14/07/2048	चंद्र 26/08/2048 मंगल 25/09/2048 राहु 11/12/2048 गुरु 18/02/2049 शनि 11/05/2049 बुध 24/07/2049 केतु 23/08/2049 शुक्र 17/11/2049 सूर्य 13/12/2049	मंगल 03/01/2050 राहु 26/02/2050 गुरु 16/04/2050 शनि 12/06/2050 बुध 02/08/2050 केतु 24/08/2050 शुक्र 23/10/2050 सूर्य 10/11/2050 चंद्र 10/12/2050	राहु 29/04/2051 गुरु 31/08/2051 शनि 26/01/2052 बुध 06/06/2052 केतु 30/07/2052 शुक्र 01/01/2053 सूर्य 17/02/2053 चंद्र 05/05/2053 मंगल 29/06/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 29/06/2053 05/10/2055	बुध - शनि 05/10/2055 14/06/2058	केतु - केतु 14/06/2058 10/11/2058	केतु - शुक्र 10/11/2058 10/01/2060	केतु - सूर्य 10/01/2060 17/05/2060
गुरु 17/10/2053 शनि 25/02/2054 बुध 22/06/2054 केतु 10/08/2054 शुक्र 26/12/2054 सूर्य 05/02/2055 चंद्र 15/04/2055 मंगल 02/06/2055 राहु 05/10/2055	शनि 08/03/2056 बुध 25/07/2056 केतु 21/09/2056 शुक्र 04/03/2057 सूर्य 22/04/2057 चंद्र 13/07/2057 मंगल 08/09/2057 राहु 03/02/2058 गुरु 14/06/2058	केतु 22/06/2058 शुक्र 17/07/2058 सूर्य 25/07/2058 चंद्र 06/08/2058 मंगल 15/08/2058 राहु 06/09/2058 गुरु 26/09/2058 शनि 20/10/2058 बुध 10/11/2058	शुक्र 20/01/2059 सूर्य 10/02/2059 चंद्र 18/03/2059 मंगल 11/04/2059 राहु 14/06/2059 गुरु 10/08/2059 शनि 17/10/2059 बुध 16/12/2059 केतु 10/01/2060	सूर्य 16/01/2060 चंद्र 27/01/2060 मंगल 03/02/2060 राहु 23/02/2060 गुरु 11/03/2060 शनि 31/03/2060 बुध 18/04/2060 केतु 25/04/2060 शुक्र 17/05/2060
केतु - चंद्र 17/05/2060 16/12/2060	केतु - मंगल 16/12/2060 14/05/2061	केतु - राहु 14/05/2061 01/06/2062	केतु - गुरु 01/06/2062 08/05/2063	केतु - शनि 08/05/2063 16/06/2064
चंद्र 03/06/2060 मंगल 16/06/2060 राहु 18/07/2060 गुरु 15/08/2060 शनि 18/09/2060 बुध 18/10/2060 केतु 31/10/2060 शुक्र 05/12/2060 सूर्य 16/12/2060	मंगल 25/12/2060 राहु 16/01/2061 गुरु 05/02/2061 शनि 28/02/2061 बुध 22/03/2061 केतु 30/03/2061 शुक्र 24/04/2061 सूर्य 02/05/2061 चंद्र 14/05/2061	राहु 10/07/2061 गुरु 31/08/2061 शनि 30/10/2061 बुध 24/12/2061 केतु 15/01/2062 शुक्र 20/03/2062 सूर्य 08/04/2062 चंद्र 10/05/2062 मंगल 01/06/2062	गुरु 17/07/2062 शनि 09/09/2062 बुध 27/10/2062 केतु 16/11/2062 शुक्र 12/01/2063 सूर्य 29/01/2063 चंद्र 26/02/2063 मंगल 18/03/2063 राहु 08/05/2063	शनि 11/07/2063 बुध 07/09/2063 केतु 30/09/2063 शुक्र 07/12/2063 सूर्य 27/12/2063 चंद्र 30/01/2064 मंगल 22/02/2064 राहु 23/04/2064 गुरु 16/06/2064
केतु - बुध 16/06/2064 13/06/2065	शुक्र - शुक्र 13/06/2065 13/10/2068	शुक्र - सूर्य 13/10/2068 13/10/2069	शुक्र - चंद्र 13/10/2069 14/06/2071	शुक्र - मंगल 14/06/2071 13/08/2072
बुध 06/08/2064 केतु 28/08/2064 शुक्र 27/10/2064 सूर्य 14/11/2064 चंद्र 14/12/2064 मंगल 04/01/2065 राहु 28/02/2065 गुरु 17/04/2065 शनि 13/06/2065	शुक्र 02/01/2066 सूर्य 04/03/2066 चंद्र 14/06/2066 मंगल 24/08/2066 राहु 22/02/2067 गुरु 04/08/2067 शनि 12/02/2068 बुध 03/08/2068 केतु 13/10/2068	सूर्य 31/10/2068 चंद्र 01/12/2068 मंगल 22/12/2068 राहु 15/02/2069 गुरु 04/04/2069 शनि 01/06/2069 बुध 23/07/2069 केतु 13/08/2069 शुक्र 13/10/2069	चंद्र 03/12/2069 मंगल 07/01/2070 राहु 09/04/2070 गुरु 29/06/2070 शनि 03/10/2070 बुध 28/12/2070 केतु 02/02/2071 शुक्र 14/05/2071 सूर्य 14/06/2071	मंगल 09/07/2071 राहु 11/09/2071 गुरु 06/11/2071 शनि 13/01/2072 बुध 13/03/2072 केतु 07/04/2072 शुक्र 17/06/2072 सूर्य 09/07/2072 चंद्र 13/08/2072

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 7, 8, 6
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

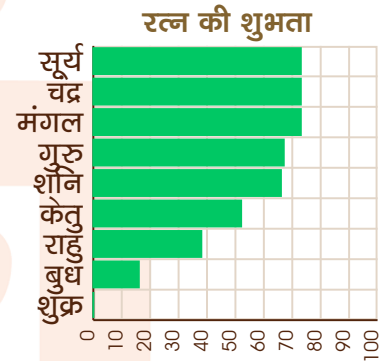


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	73%	धन, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	73%	धनार्जन, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	73%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	67%	कम खर्च, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	66%	धनार्जन, पराक्रम, सुख
लहसुनिया	केतु	52%	धन, कम खर्च
गोमेद	राहु	38%	दुर्घटना, धन हानि
पन्ना	बुध	16%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	13/06/1988	80%	80%	86%	0%	73%	0%	66%	12%	58%
राहु	14/06/2006	61%	61%	61%	16%	67%	12%	72%	56%	28%
गुरु	14/06/2022	80%	80%	80%	0%	80%	0%	66%	38%	52%
शनि	13/06/2041	61%	61%	61%	28%	67%	12%	78%	50%	28%
बुध	14/06/2058	80%	61%	73%	41%	67%	12%	66%	38%	52%
केतु	13/06/2065	61%	61%	80%	16%	67%	12%	53%	12%	64%
शुक्र	13/06/2085	61%	61%	73%	28%	67%	25%	72%	50%	58%
सूर्य	14/06/2091	86%	80%	80%	16%	73%	0%	53%	12%	28%
चंद्र	14/06/2101	80%	86%	73%	28%	67%	0%	66%	12%	28%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज, नीलम एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य आपको संपत्तिवान, भाग्यवान एवं कुटुंब प्रेमी बनायेगा। माणिक्य रत्न के शुभत्व से आपके लिए धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। यह रत्न आपको आत्मनिर्भर रहने में सहयोग करेगा। सरकारी कार्यों में सफलता देगा। हड्डियों से जुड़े रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से सूर्य की शुभता बढ़ती है। तथा पीड़ा कम होती है। इसलिए सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना अनुकूल रहेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। आजीविका क्षेत्र को प्रबल करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य सुख दे सकता है। रत्न शुभता से कार्यक्षेत्र में आपको उच्च सम्मानित पद, आधिकारिक शक्तियां,



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रशासनिक कुशलता की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको व्यवसाय में सफलता भी देगा। माणिक्य रत्न की शुभता से आपके अपने पिता से संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आप किसी सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हो सकते हैं। सरकारी विभागों से जुड़े कार्य रत्न शुभता से शीघ्र पूरे हो सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई हैं वो फिर से शुरू हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का

धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यों से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वाकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते हैं। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। गुरु ग्रह का पुखराज रत्न आपके लिए शुभ रत्न रहेगा। पुखराज रत्न धारण कर आप धार्मिक आचरण करेंगे। आपकी परोपकार प्रवृत्ति देगा। रत्न शुभता से आप अप्रिय भाषण और व्यर्थ विषयों पर व्यय करने से बचेंगे। पुखराज शुभता आपको चिकित्सक, लोकसेवक सम्पादक, वेदज्ञानी, धर्मगुरु या सम्पादक बना

सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको जीवन काल में धन, सम्पत्ति, सोना, वस्त्र आदि पर्याप्त मात्रा में देगा। साथ ही दूर प्रदेशों के प्रवास से आपको लाभ और कीर्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते हैं। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप नीलीभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपत्ति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय

नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दूसरे भाव में स्थित है। दूसरे भाव की शुभता प्राप्ति के लिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको सरकारी क्षेत्रों के दंड से बचाव करेगा। वाणी में दार्शनिकता का भाव लायेगा। यह रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। पारिवारिक संबंधों में मधुरता लाने में भी लहसुनिया रत्न शुभ फल प्रदान करेगा। धन बढ़ायेगा। पारिवारिक सुखों को बढ़ायेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपके लिए शुभत्व प्रदायक रत्न है।

केतु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको सेवा कर्म में सुख एवं उद्योग-धंधों में लाभ एवं सफलता देगा। इस रत्न की शुभता से आपको इहलोक और परलोक दोनों में सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख भोगने के अवसर देगा। आपके व्यर्थ के व्ययों को नियंत्रित करेगा। इस रत्न को पहनने पर आप ऋण मुक्त, धार्मिक, परोपकारी और प्रलोभन से मुक्त होंगे। यह रत्न शुभ होकर आपको शयन सुख देगा तथा अनिद्रा रोग का निवारण करेगा। यह रत्न पहन कर आप अपने जीवन लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर पाएंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का 9 माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने पर आपको जन्म स्थान पर रहने के अवसर कम मिल सकते हैं। यह रत्न आपको स्वभाव से जल्दबाज और वाचाल बना

सकता है। आपकी सहभागिता ऐसे कार्यों में भी हो सकती है जो धार्मिक व सामाजिक न हो। बातचीत में भाषा की शालीनता का उल्लंघन आपके द्वारा हो सकता है। गोमेद रत्न के कारण वृद्ध अवस्था में आप को सुख की कमी का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से धन हानि के योग भी बन रहे हैं। आपका अधिकांश समय विदेश में व्यतीत हो सकता है।

राहु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न पहनने पर आपके स्वभाव में मृदुता की कमी होगी। पारिवारिक जीवन में आपको कष्ट का सामना करना होगा। आपके कुटुंब में मतभेद और विभिन्न विचारधाराएं जन्म लेंगी। इस रत्न को रत्न धारण करने से आपके संचित धन में कमी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में अस्थिरता आयेगी। आपको कुटुंब सुख-सहयोग प्राप्त नहीं हो पाएंगे। यह रत्न पहनने पर आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। रत्न में शुभता का सहयोग प्राप्त न होने के कारण यह रत्न आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। धन और आयु दोनों के लिए यह रत्न आपके लिए प्रतिकूल रत्न सिद्ध होगा।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न मोती धारण करने से आपको शिक्षा, बुद्धि विकास, वक्तव्य और शास्त्रीय शोध विषयों में दिक्कतें आ सकती हैं। सांपत्तिक स्थिति में हानि हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से शेयर बाजार में आपका हानि से सामना हो सकता है। रत्न प्रभाव से बैंक कार्य आपकी परेशानी की वजह बन सकते हैं। बैंक कारोबार में हानि हो सकती है। सरकारी वसूली और टैक्स इत्यादि आपको सरकारी दंड दे सकते हैं। आपकी वाणी में कड़वाहट, शिक्षा में व्यवधान एवं चिड़चिड़ेपन की स्थिति बन सकती है। रत्न पहनने पर शत्रु आपकी परेशानी बढ़ा सकते हैं। गलत परामर्श के कारण जोखिम भरा निर्णय लेने से आपको हानि हो सकती है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते हैं। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्ति को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्ति में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपके उत्साह, विनम्रता और व्यवहार कुशलता में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी वाणी की मधुरता में भी कमी ला सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपको कला और यात्राओं में सुख की कमी करा सकता है। आपके वैवाहिक

जीवन में कुछ विसंगतियां आ सकती है। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहकर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकती है। हीरा रत्न आपके धन लाभ और संपन्नता में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी संकल्पशक्ति भी आंशिक रूप से प्रभावित हो सकती है। विवाह में विलम्ब भी यह रत्न आपको दे सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि

(14/06/2022 - 13/06/2041)

शनि की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, मोती, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(13/06/2041 - 14/06/2058)

बुध की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पुखराज, नीलम, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



केतु
(14/06/2058 - 13/06/2065)

केतु की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, माणिक्य, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(13/06/2065 - 13/06/2085)

मूंगा, नीलम, पुखराज, माणिक्य, मोती, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(13/06/2085 - 14/06/2091)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, गोमेद व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(14/06/2091 - 14/06/2101)

चन्द्र की दशा में आपका मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मून स्टोन

आपका जन्म वृश्चिक राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह मंगल होता है। मून स्टोन रत्न चंद्रमा ग्रह के लिये धारण किया जाता है और चंद्रमा वृश्चिक राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि चंद्रमा की कर्क राशि वृश्चिक लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृश्चिक राशि के लग्न वाले जातकों को मून स्टोन रत्न धारण करके चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मून स्टोन रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मून स्टोन को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मून स्टोन चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मून स्टोन को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है। मून स्टोन को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ॐ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही,

सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मून स्टोन की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मून स्टोन की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृश्चिक लग्न वाले जातक यदि मून स्टोन की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं हैं। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता है। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता है। उस भाव के फलों का नाश करता है। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता है। उस भाव के फलों की हानि होती है। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय है। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता है।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विच्छेद का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविच्छेद का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता है।

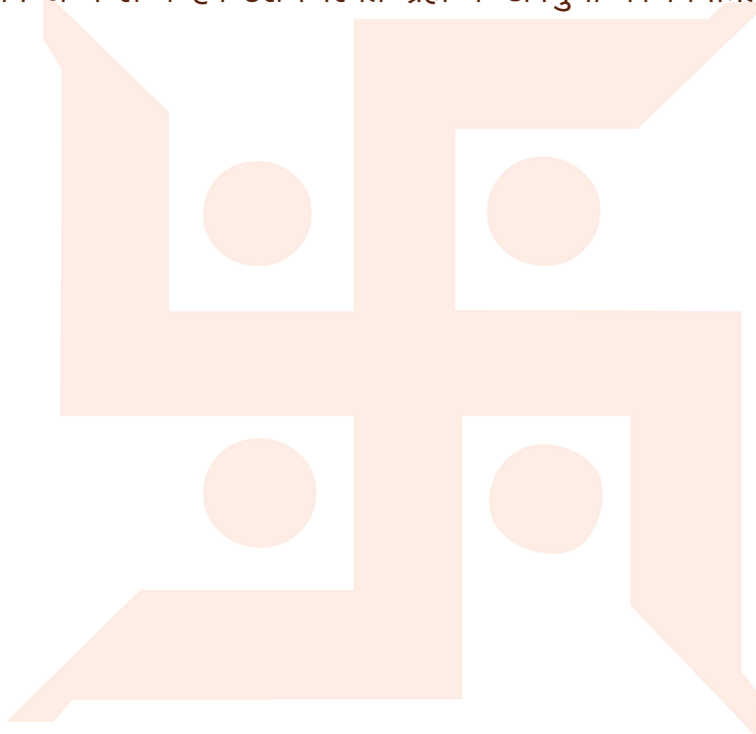
आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित हैं। आपके पारिवारिक सुखों में कमी, पैतृक संपत्ति नाश, संघर्ष, सौतेली माता से मतभेद, की स्थिति बन सकती हैं। आप अनुचित तरीकों से लाभार्जन करने का प्रयास कर सकते हैं। धन वृद्धि करने के लिए अनैतिक नियमों का सहारा आप ले सकते हैं। अष्टम भाव में राहु आपके क्रोध भाव में वृद्धि कर रहा है, आप को व्यर्थ विषयों पर बातें करने से बचना चाहिए। कुटुम्बियों से त्याज्य एवं अपमानित, कभी लाभ और कभी हानि, निष्ठुर, कई बार हानि पाने वाला तथा स्वजनों से दूर रहने वाला।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को

कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपत्ति का नाश और माता-पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 6, 8 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/12/1981-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

शुभ
सम
सम
सम
सम

क्षेत्र

धनार्जन
कम खर्च
धन
शत्रु से कष्ट
व्यावसायिक परेशानी



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। नौकरी में थोड़ा बहुत रुकावट आती है या कभी पदावनति होने का भय होता है। प्रायः जातक को पैतृक सम्पत्ति का मनोवांछित लाभ नहीं मिलता है। व्यापारादि कार्यों में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और विशेष परिश्रम करने के बावजूद भी उसका सही फल प्राप्त नहीं होता है। कामों में स्थिरता प्रायः नहीं आ पाती।

इस योग के प्रभाव से जातक अपने मित्रों के द्वारा कभी थोड़ा बहुत छले जाते हैं। जिस कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। कभी जातक के शरीर में रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है तथा आंशिक रूप में मानसिक परेशानी घेरे रहती है। जातक को कुटुम्ब से अपयश मिलता है एवं आत्मीय परिजनों से सम्मान नहीं मिलता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता एवं वाणी कभी-कभी दूषित हो जाती है। परिणामस्वरूप जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात पर लड़ाई-झगड़े करने को भी तैयार हो जाता है और जातक को आंशिक रूप से आर्थिक नुकसान होता है तथा उधार में दिया हुआ पैसा प्रायः डूब ही जाता है। जातक को कभी शस्त्राघात का भय होता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं, परन्तु अपने षड्यन्त्र में वे कभी सफल नहीं होते। जातक को अकाल मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान्, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान्, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, कोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संहि, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी,

पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घट्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रुचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रुचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपुरुषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरुष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रुचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरुष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्यकता प्राप्त होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीघ्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते हैं। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रुचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते हैं। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रुचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते हैं।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते हैं। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षाओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यों में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रुचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रुचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद् व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सिंह राशि अग्नि तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। कार्यक्षेत्र में आप सामान्यतया उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा नवीन आयाम स्थापित करने में सफल होंगे।

आपके लिए आजीविका की दृष्टि से आपके लिए प्रशासकीय सेवा, औषधिविज्ञान, सरकारी कर्मचारी, कम्प्यूटर साइंस, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत विज्ञान, पर्यटन (पर्वतीय) क्षेत्र, उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही वैज्ञानिक शोध क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। अतः सतत उन्नति एवं लाभ के लिए आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही आजीविका का चयन करना चाहिए। इससे उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र, रत्न संबंधी कार्य, विद्युत एवं मैकेनिकल उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण, पर्यटन केंद्र का स्वामित्व, सरकारी ठेके आदि से लाभ एवं प्रचुर मात्रा में धन अर्जित होगा। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करेंगे तो इससे आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों एवं वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इससे आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में भी किसी सम्माननीय सदस्य या पदाधिकारी के रूप में कार्य कर सकते हैं इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही सामाजिक जनों के कल्याणकारी कार्यों के करने में भी समर्थ होंगे। आपके प्रति उनके मन में अपनत्व का भाव होगा तथा उच्चस्तर पर शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा उनके प्रभाव एवं सहयोग से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे साथ ही आप भी पिता के सम्मान वृद्धि के लिए परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु पंचम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि पंचम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि नवम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि अष्टम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व पत्नी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

14 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादश एवं द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी और आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं बड़े भाई का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 30 मई के बाद चतुर्थस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें धन का व्यय सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

30 मई के बाद चतुर्थ स्थान का राहु आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अचानक परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। आपके

माता पिता एवं पुत्र का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा और आप भी मानसिक रूप अशान्त व तनावग्रस्त रहेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में पंचम स्थान का राहु संतान संबंधित चिन्ताएं दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। बच्चों को सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। 14 मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय गर्भवती स्त्रियों को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहे।

परन्तु 14 मई के बाद का समय आपके स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरु वायु तत्व राशि में होने कारण सांस, संक्रामक रोग व पेट संबंधित बीमारियों से कष्ट दे सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता की उम्मीद कम ही है। 14 मई के बाद उच्च शिक्षा में रुकावटें भी आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ समय और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का घ से दूर स्थानान्तरण हो सकता है।

यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी

करेंगे। मई के बाद अधिक व्यस्तता के कारण पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- नित्य प्रति सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार को काली वस्तुओं का दान करें एवं गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और व्रत रखें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नति भी होगी और आपके कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जून के बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों की उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु वे आपका कुछ नहीं कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत हैं। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छटे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएँगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(14/06/2022 - 13/06/2041)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 14/06/2022 को आरम्भ और 13/06/2041 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

अंतर्दशा :- शनि - शनि
(14/06/2022 - 16/06/2025)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/06/2022 को प्रारंभ होकर 13/06/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 14/06/2022 को प्रारंभ होकर 16/06/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके अधीनस्थ बहुत से कर्मचारी काम कर सकते हैं। सरकार के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। आप आमोद-प्रमोद के शौकीन हैं, लेकिन इस अवधि में आपके मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।
- पीपल को जल दें।

अंतर्दशा :- शनि - बुध
(16/06/2025 - 25/02/2028)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 14/06/2022 को प्रारंभ होकर 13/06/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 16/06/2025 को प्रारंभ होकर 25/02/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धार्मिक और विद्वान बनेंगे। दर्शन और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। उद्योग-व्यापार से संबंधित विषयों पर व्याख्यान द्वारा धन अर्जित कर सकते हैं। बुद्धिमत्ता और शक्ति में वृद्धि होगी।

विद्या के आधार पर धन अर्जित करेंगे। समाज सेवा और दान-धर्म पर धन व्यय

करेंगे। धन की बचत में भी दक्ष होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 (रक्ती के पन्ने की सोने की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में बुधवार के दिन प्रातःकाल प्रार्थना करते हुए धारण करें।

अंतर्दशा :- शनि - केतु
(25/02/2028 - 04/04/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/06/2022 को प्रारंभ होकर 13/06/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 25/02/2028 को प्रारंभ होकर 04/04/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों आदि का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अग्नि, चोरी, मुकदमेबाजी या जुए के कारण धनहानि हो सकती है। आप पर कर्ज चढ़ सकता है, चिंताएं बढ़ेंगी। इन कारणों से आप अध्यात्म और धर्म में मन लगा सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए : हनुमान जी की उपासना करें। मंगलवार और शनिवार को उपवास रखें। उपवास के बाद हनुमान जी को मिठाई अर्पित करें। उपवास मीठी वस्तु से ही तोड़ें। उस दिन नमक ग्रहण न करें।

केतु के निम्न उपाय भी करें:

- कुत्तों को भोजन दें।
- भूरा कुत्ता पालें।
- गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(04/04/2029 - 04/06/2032)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/06/2022 को प्रारंभ होकर 13/06/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 04/04/2029 को प्रारंभ होकर 04/06/2032 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी बुद्धि तीव्र होगी, मगर कार्यक्षमता में कुछ कमी आ सकती है। संगीत और कला में रुचि हो सकती है। आर्थिक स्थिति में कुछ गिरावट आ सकती है, क्योंकि आपकी विवादों में दिलचस्पी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com